किसान संघोष

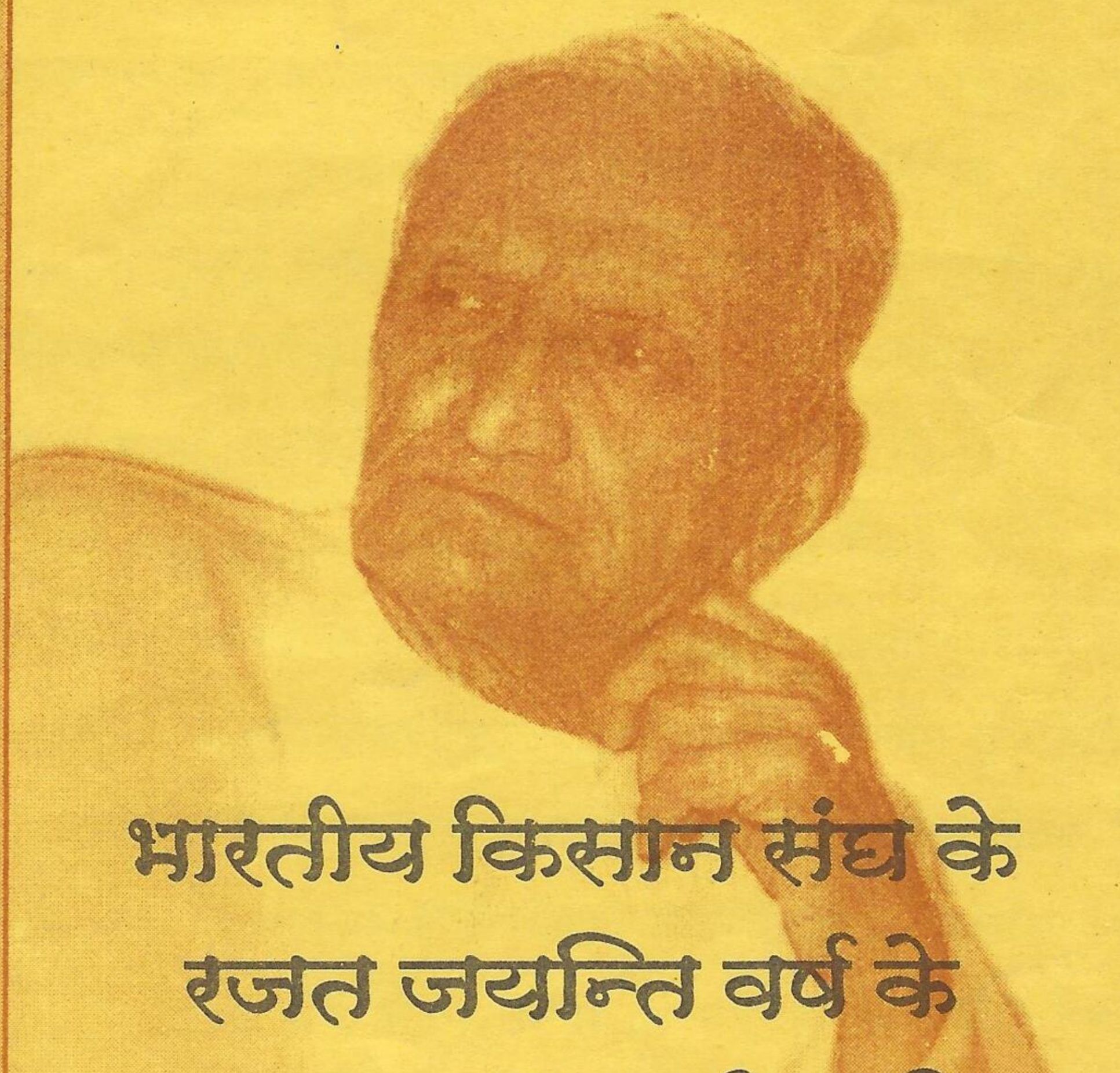

भारतीय किसान संघ के
रजत जयन्ति वर्ष के
उद्घाटन समारोह की

स्मरणिका

अन्न फल दूध जुटाने वाले हम

अखिल विश्व के लिए अन्न, फल, दूध जुटाने वाले हम।
शोषित पीड़ित हर किसान का भाग्य जगाने वाले हम।।

हमें किसी से वैर नहीं है, हमें किसी से भीति नहीं।
सब से मिलकर काम करेगें, संघटन की रीति यही।
जातिवाद और राजनीति का भेद मिटाने वाले हम।
शोषित पीड़ित कर किसान का भाग्य जगाने वाले हम।।

अपने घोर परिश्रम से हम पैदावार बढ़ा देंगे।
कंकड़ पत्थर समतल कर बंजर में फसल उगा देंगे।
भारत मां का खोया वैभव वापस लाने वाले हम।
शोषित पीड़ित हर किसान का भाग्य जगाने वाले हम।।

और किसी के मुंह की रोटी, हरना अपना काम नहीं।
पर अपने अधिकार गंवाकर, कर सकते आराम नहीं।
अपने हक के लिए सतत, संघर्ष चलाने वाले हम।
शोषित पीड़ित हर किसान का भाग्य जगाने वाले हम।।

पूंजीपति से मिलकर अफसरशाही जाल बिछाती है।
करें रातदिन मेहनत हम पर हालत सुधर न पाती है।
इनके फौलादी पंजों से मुक्ति दिलाने वाले हम।
शोषित पीड़ित हर किसान का भाग्य जगाने वाले हम।।

अपना पथ आसान नहीं है, यह भी हमने जाना है।
पर मंजिल तक पहुचेंगे यह निश्चय हमने ठाना है।
त्याग तपस्या कुर्बानी की शमा जलाने वाले हम।
शोषित पीड़ित हर किसान का भाग्य जगाने वाले हम।।

अनुक्रमणिका

क्र०	विषय	पृष्ठ सं०
१	**प्रस्तावना** (गौरवान्वित हुआ कोटा)	२ से ४
२	**किसान समृद्ध तो गांव समृद्ध** कुंवर जी भाई जाधव	५ से ६
३	**सफलता का आधार संगठन** दत्तोपंत जी ठेंगड़ी	७ से १२
४	**किसान गंगोत्री की कथा** संकटा प्रसाद सिंह	१३ से २१
५	**सावधान रहें जागते रहें, बढ़ते रहें** दत्तोपंत जी ठेंगड़ी	२२ से २७

:: सम्पादक ::

रामनाथ मालव

संघटन मंत्री, चित्तौड़ प्रान्त

मोबाईल : ६४१४३–६६२४४

:: सहयोग राशि ::

रूपये ७/–

:: प्रकाशक ::

भारतीय किसान संघ, कोटा विभाग

सम्पादकीय.....

हमारा सौभाग्य है कि राजस्थान की औद्योगिक नगरी कोटा में चम्बल नदी के किनारे दशहरा मैदान कोटा में 4 मार्च 1979 को श्रृद्धेय स्वर्गीय श्रीमान् दपोपंत जी ठेंगड़ी के आशीर्वाद व स्वर्गीय श्रद्धेय श्रीमान् लक्ष्मणसिंह जी शेखावत (भैय्या जी) के मार्गदर्शन में भारतीय किसान संघ की स्थापना हुई। सम्पूर्ण भारत से किसानों ने कोटा में किसान संघ की रीतिनीति बनाई तथा किसान संघटनों को अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त हुआ। कोटा से शुरू हुआ किसान संघ का आज देश के लगभग सभी जिलों में कार्य चल रहा है। देश में अनेकों महत्वपूर्ण कार्य भारतीय किसान संघ के काराण सम्पन्न हुऐ हैं जैसे :– विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ संघर्ष, बिजली नीति के लिये संघर्ष, लाभकारी मूल्य दिलाने, कृषि नीति घोषित करने आदि अनेक विषयों पर भारतीय किसान संघ ने संघर्ष किया है।

इस वर्ष में भारतीय किसान संघ के पच्चीस वर्ष पूर्ण हो चुके है। सौभाग्य से रजत जयन्ती वर्ष का उद्घाटन कोटा में ही हुआ। सम्पूर्ण देश के सभी प्रान्तों से किसान बंधु हजारों की संख्या में कोटा पहुँचे तथा रजत जयन्ती वर्ष का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर हाड़ौती के किसान बंधुओं का विशाल एकत्रीकरण हुआ, जिसमें १५ हजार किसानों को श्रद्धेय दत्तोपंत जी ठेंगडी, अखिल भारतीय संघटन मंत्री संकटाप्रसादसिंह जी, मार्गदर्शक सुरेश रावजी सहित सम्पूर्ण देश के सभी प्रान्तों के कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

हाड़ौती क्षैत्र का किसान रजत जयन्ती वर्ष उद्घाटन समारोह मनाकर धन्य हुआ। भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रम किसान संघ की जन्म स्थली कोटा में होते रहे, ऐसी हमारी इच्छा है। भगवान बलराम जी का आशीर्वाद हमारे साथ है। हमारा संकल्प है, हम संगठन को गांव–गांव घर–घर तक पहुंचाने में समर्थ होंगे। रजत जयन्ती उद्घाटन समारोह व प्रतिनिधि सभा में जो मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उसे एकत्र कर आपके समक्ष रखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जिसका सभी किसानों को लाभ प्राप्त होगा। इसी आशा के साथ.....

रामनाथ मालव

संगठन मंत्री चितौड़ प्रान्त

प्राक्कथन

गौरवान्वित हुआ कोटा

भारतीय किसान संघ का प्रादुर्भाव विषम परिस्थितियों में हुआ। किसान संघटन होने का दावा अनेक समूह पूरे देश में अलग–अलग स्थानों पर कर रहे थे। किसान नेता होने का दम्भ भी अनेक लोगों ने पाल रखा था। प्रत्येक राजनीतिक दल ने भी वोट बैंक बनाने के लिये अपने–अपने हस्तक समूह किसान नाम से खड़े किये हुये थे। किन्तु किसानों की दशा दिन–प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही थी। देश को स्वतन्त्र हुए उस समय बत्तीस वर्ष हो चुके थे किन्तु खेती और किसानोंको अपना संरक्षक ढूँढने पर भी नहीं मिलता था। इन लोगों की कारगुजारियों के कारण किसान हताश, निराश और अविश्वासी होकर किंकर्तव्य विमूढ़ को गया था। अब तक किसानों का नाम लेकर जो भी किसान के बीच में आये उनसे किसानों ने धोखा ही खाया।

परन्तु भारतीय किसान संघ ने पूरे भारत में किसानों का विश्वास संपादन किया। भारतीय किसान संघ निरन्तर वृद्धिगत रहा। किसानों का अपार सहयोग उसे मिला क्योंकि भारतीय किसान संघ की भूमिका कुछ और ही थी। उसे किसनों के सच्चे हित के लिये काम करना था। उसके कार्यकताओं के लिए खेती, किसान, ग्राम और राष्ट्र एक दूसरे के पर्यायवाची थे। थोथी नेतागिरी करके अपना नाम चमकाने के लक्ष्य से वे अनजान थे। छल, कपट, दम्भ, पदलिप्सा, महत्वाकांक्षा आदि राजनीतिक बुराईयों से उनका दूर का भी संबंध न था। देश से बेरोजगारी, भुखमरी, भ्रष्टाचार, लूटखसोट, अन्याय, अनाचार दूर करने के लिये सबल–सशक्त समाज खड़ा करने हेतु त्याग, तपस्या और बलिदान की सिद्धता उनके पास थी। अपने संस्थापक माननीय दत्तोपन्त ठेंगड़ी की जीवन्त प्रेरणा संघटन के कार्यकर्ताओं के पास थी। फलस्वरूप शीघ्र ही भारतीय किसान संघ सारे भारत में ऋतुर्दिक फैल कर महान वटवृक्ष बनकर खड़ा हो गया।

माननीय दत्तोपन्त जी के संबंध में कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाने के समान है तो भी सूरज की आरती उतारने के लिए तो

दीपक भी चाहिए ही। माननीय ठेंगड़ी जी ने पूरा जीवन राष्ट्र के उत्थान में लगा दिया। उनकी बौद्धिक क्षमता, संघटन क्षमता, अपार क्रियाशीलता, अध्ययनशीलता, दुर्लभ अन्वीक्षणता, चिन्तन–मननशीलता, दार्शनिकता, निरहंकारिता, विनयशीलता, निरन्तर भ्रमणशीलता और व्यक्ति को परखकर उसे घड़ने की कला ने अनेक राष्ट्रीय स्तर के संघटन और कार्यकर्ता भारत राष्ट्र को प्रदान किये तो अपार साहित्य भण्डार भी राष्ट्र को प्रदान किया। अनेक विदेशों को भी उन्होंने दिशाबोध कराया। साम्यवादी देश भी उनसे प्रेरणा–मार्गदर्शन लेकर लाभान्वित भी हुए और प्रसन्न भी। वे अजातशत्रु थे। जो उनसे मिला वह उनका ही हो गया। उनके साहचर्य से भारतीय किसान संघ भी उनके गुणों से आपूरित हुआ। यथा अनेक अवसरों पर "जो हमसे टकरायेगा, वह हममे ही मिल जायेगा।" इस उद्घोषणा पर भारतीय किसान संघ खरा उतरा।

कोटा विभाग के कार्यकर्ताओं की प्रबल इच्छा थी कि संघटन का प्रारंभ कोटा से हुआ था तो रजत जयन्ती वर्ष का शुभारम्भ भी कोटा से ही हो और वह भी माननीय दत्तोपन्त जी के द्वारा ही हो। केन्द्रीय कार्यकारिणी की सहज स्वीकृति मिल गयी तो कोटा गौरवान्वित हो गया। स्वयं दत्तोपन्त जी ने कहा कि जिस स्थान पर किसी संघटन का जन्म हो उसी स्थान पर रजत जयन्ती समारोह हो ऐसा नहीं देखा सुना। किन्तु भारतीय किसान संघ के साथ ऐसा हुआ। अतः कोटा के कार्यकर्ता इस आयोजन के लिए बधाई के पात्र हैं।

दिनांक २८–२६ फरवरी २००४ को दो दिवसीय समारोह कोटा में प्रारंभ हुआ। सारे भारत के दो हजार से अधिक प्रतिनिधी राष्ट्रीय प्रतिनिधी सभा के लिए प्रत्येक प्रान्त से कोटा में आये। स्वामी विवेकानन्द विद्यालय, महावीर नगर तृतीय में आवास व्यवस्था थी। सार्वजनिक रजत जयन्ती उद्घाटन समारोह ऐतिहासिक दशहरा प्रांगण में दिनांक २६ फरवरी २००४ को आयोजित हुआ। कोटा विभाग के पन्द्रह हजार किसान कार्यकर्ता उसमें आये थे। आवास से समारोह स्थल तक भगवान बलराम की शोभायात्रा राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने निकाली। कोटा महानगर की जनता ने चार किलो मीटर मार्ग में स्थान स्थान पर स्वागत द्वार बनाये। हजारों नागरिक स्त्री

पुरूष पूरे मार्ग में पुष्पवर्षा कर रहे थे। राष्ट्रीय प्रतिनिधीगण की विभिन्न भाषाओं में गाते हुए, नारे लगाते हुए और नाचते हुए जा रहे थे। जनता भी अभिभूत और प्रतिनिधि भी अभिभूत।

ऐसे महिमामय एवं गौरवशाली अद्वितीय कार्यक्रम की स्मरणिका सभी सहयोगी बन्धुओं के पास रहे, इस कल्पना से यह एक सारगर्भित पुस्तिका कोटा विभाग भारतीय किसान संघ ने प्रकाशित की है। प्रतिनिधि सभा और उद्घाटन समारोह के प्रमुख उद्बोधन इसमें है। हम कहाँ पर थे, कहाँ पर हैं और कहाँ पर जाना है, इन प्रश्नों के संकेतात्मक उत्तर इन उद्बोधनों में है।

कार्यकर्ता बन्धुओं के लिये ये पाथेय का काम करेंगे। ४ मार्च १९७९ को भारतीय किसान संघ के उद्घाटन का मा० दत्तोपन्त जी का ऐतिहासिक उद्बोधन उनकी पुस्तक "ध्येय पथ पर किसान" में संग्रहित है तो दिनांक २८–२९ फरवरी २००४ को हुआ "रजत जयन्ती उद्घाटन" उद्बोधन इस पुस्तक में है। देवयोग से यह उद्बोधन उनका अन्तिम उद्बोधन बन गया। १४ अक्टूबर २००४ को महाकाल ने उन्हें किसी अन्य योजना के लिए अपने पास बुला लिया। आज वे पार्थिव रूप से हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके अविस्मरणीय व्यक्तित्व–कृतित्व की अमिट छाप हमारे हृदयों में है जो हमें दिनोंदिन आगे बढ़ते हुए शीघ्र ही लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा देती रहेगी। यह पुस्तक भी निश्चित ही इसमें सहायक होगी।

– नरेन्द्र नाथ मेघ
राष्ट्रीय संयुक्त महामन्त्री

किसान समृद्ध तो गांव समृद्ध

- कुंवर जी भाई जाधव

हम गोवंश आधारित खेती करेगें तो मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको लाभ मिलेगा। हम इसी वर्ष ये संकल्प करेगें कि हम जैविक खेती करने के बाद हमको लाभकारी मूल्य अवश्य मिलेगा। सारे भारत के प्रतिनिधि बन्धु यह निर्णय करे कि हम गौवंश आधारित खेती करेगें। किसान की जो आय है, उसकों दुगना करेगें। माननीय दत्तोपन्त जी ने कहा कि किसान संघ की ताकत का हमको पता नही है। आज कोटा–बून्दी में २५ साल के बाद सब किसान को जागृत करने का संकल्प हमको लेना है। मैं यहां से सारे भारत का छोटा दृश्य मेरे सामने खडा देख रहा हूँ। यह भारत को दृश्य गौवंश आधारित खेती करने लगेंगे तो मनुष्य तन्दुरूस्त होंगे, पशु तंदुरूस्त होगें, अपने पौधे को आपको केमिकल पेस्टिसाइज लगाने की जरूरत नही होगी। इसी आधार पर आपको केन्द्र सरकार से व राज्य सरकार से लाभदायक मूल्य दिलायेंगें, यह प्रतिज्ञा करते है कि जो–जो किसान जैविक खेती करेंगें उनके कारण बोलता हूँ जब हम एक हेक्टेयर में जैविक खेती करते है तो उसका खर्च कितना होता है। जब एक हैक्टेयर में केमिकल खेती करते है तो उससे छह हजार से ज्यादा अपना खर्च हो जाता है। जब हम जैविक खेती करते है तो उससे २५०० से ३००० तक बच जाता है। किसान का तीन हजार रूपये अपने आप बच जाता है और उत्पादन बढता है। भविष्य में कमी नही आती है। पहले साल जो व्यक्ति यह खेती करेगा, तो उसको उत्पादन में कमी आयेगी लेकिन गेंहूँ का जो भाव होगा यहां ६–७ रूपये किलों मिलता है तो जैविक खेती करने वाले को बाजार में १४ रूपये किलों का भाव मिलेगा। विदेश के लोग यहां लेने के लिए आयेंगें। जस्टिस वार्न लिबिक मरने से पहले यह बोल गया कि मेरी केमिकल फार्मिग गलत है तो भगवान का पाप किया है। उसका जो खुद

---

*अध्यक्षीय भाषण, रजत जयन्ती वर्ष उद्घाटन समारोह,
दशहरा मैदान कोटा, २६ फरवरी २००४

का पत्र जर्मन से लिखा हुआ है वह मेरे पास उपलब्ध है उसका अंग्रेजी अनुवाद उसकी वेबसाइट भी प्राप्त है। जस्टिस वार्न लिबिक ने खुद कहा कि मेरी केमिकल फार्मिग थ्योरी गलत है। मुझे कोई अवार्ड मिले इसलिए मैने जो गलत काम किया है, भगवान ने मुझे दण्ड दिया है। मरने के पहले वो अन्धा हो गया। उसके सौ साल के बाद एक ब्रिटिश साइन्टिस्ट डॉ. हार्वड वो बिहार, दिल्ली, मध्यप्रदेश में इंदौर रहे, उस समय उन्होने कहा कि मै तो केमिकल फार्मिग सीखाने आया लेकिन यहां के किसान बन्धु मेरे गुरू है, यहां की जमीन मेरी गुरू है। उन्होने महारानी विक्टोरिया को पत्र लिखा कि मै तो यहाँ मॉडल केमिकल फार्मिग सीखाने आया था, लेकिन क्या हो गया, मेरे मगज का परिवर्तन हो गया। मै तो ऑर्गेनिक फार्मिग करने वाला हो गया हूँ। पहली कम्पोस्ट जैविक खाद बनाने की फैक्ट्री इन्दौर में शुरू हुई । इन्दौर मैथड ऑफ कम्पोस्टिंग डॉ. हार्वड ने तैयार की। उस समय महात्मा गांधी जी इन्दौर मिलने गये तो महात्मा गांधी देखकर खुश हुये कि गांव को स्वावलम्बी करना है, गांव को समृद्व करना है, तो अपना गोबर अपना आर्गेनिक कम्पोस्ट से जैविक खाद उत्पन्न करना चाहिए। 'स्वावलम्बी किसान, जैविक खाद का भरपूर उपयोग, समृद्व गांव, समृद्व देश,' यह महात्माजी ने १९३५ में इंदौर में लिखा है। दोष किसान का नहीं है, सरकार की योजना का दोष है। उन्होने हरित क्रांति के मार्फत अपनी जमीन के खेत के सब बैक्टिेरिया मार दिये और कहा यह हरित क्रांन्ति है। उत्पादन बढ़ा, किसान गरीब हुआ। लेकिन उत्पादन बढने पर किसान कैसे गरीब हुआ। वह मार्केट मे जाता है, उसे जो कीमत मिलनी चाहिए, वह कीमत उसे नहीं मिलती। आज सरकार कहती है कि किसान की आय एक–दो साल में दुगुनी करना है, मैंने पूछा भाई, आज किसान की कितनी आय है, यह तो बताइये। बाद में दुगनी की बात करना। जस्टस वार्न लिबिक, हार्वड ने कहा कि आज जितना रोग मनुष्य में है, उन सबका कारण केमिकल फार्मिग है। यदि किसान ऑर्गेनिक फार्मिग करेगें तो मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा होगा, पशु का स्वास्थ्य अच्छा होगा और पेस्टिसाइड नही, गौमूत्र से रोग टलेगा। किसान समृद्ध होगा, गांव समृद्ध होगा। "चलो गांव की ओर" यह जो संकल्प है, हम पूरा करेगें।

सफलता का आधार संगठन

- दत्तापंत ठेंगड़ी

आपको ज्ञात होगा कि भारतीय किसान संघ का रजत जयन्ती वर्ष सम्मेलन यहां हो रहा है। २५ वर्ष पूर्व इसी भूमि पर इसी मंच पर किसान संघ का निर्माण किया गया था, और आज २५ साल बाद इसी भूमि पर दृश्यमय खड़े देश के कोने–कोने से आये हुये, प्रतिनिधि बंधुगण राजस्थान के कोने–कोने से आये हुए किसान खासकर कोटा विभाग में से इस सभा के लिये आये हुए एक प्रचण्ड वटवृक्ष, बड़े वटवृक्ष के समान किसान संघ का निर्माण हुआ। यह दृश्य हम २५ साल के अन्दर देख रहे है। किसान संघ क्या चाहता है ? इसके बारे में अभी भाषण देने की आवश्यकता नही है। दो–चार वर्षो में आपको पता चल गया होगा कि किसान संघ किसानों के लिए क्या चाहता है। इसी जयन्ती वर्ष सत्र में किसानों का अखिल भारतीय मांग पत्र तैयार किया है। इससे आपको पता चलेगा कि हमारी मांगे क्या है, लेकिन मांगे तो सभी रखते है। किसान संघ का मांग रखने का तरीका तथा बाकी संस्थाओं का मांग रखने का तरीका अलग–अलग है। बाकी संस्था का तरीका यह है कि "हमारी मांगे पूरी करो चाहे जो मजबूरी हो।" किसान संघ का मांग रखने का तरीका अलग है, वह राष्ट्रवादी है। हमारी भावना है कि राष्ट्र का कल्याण और किसान का कल्याण, दोनो एक ही है। राष्ट्र जब खडा होता है तो किसान गिर नही सकता है। और किसान खडा है, तो राष्ट्र को गिरने नही देगा। यह हमारी भावना है। इसके लिए जब कभी हम मांग करते है तो हमारी जिम्मेदारी भी समझते है। किसानों की तीन मांगे जो है, उनमें से महत्वपूर्ण मांग है कि किसानों को अपने माल का लाभकारी मूल्य मिलना चाहिए। हमारी यह मांग कैसे पूरी हो सकती है ? यह भी सरकार को समझाया । मैं इस मांग का उल्लेख करता हूँ कि यह मांग क्यों खडी हुई। पहले यहाँ अग्रेंज सरकार

---

* उद्घाटन भाषण, रजत जयन्ती वर्ष उद्घाटन समारोह, दशहरा मैदान, कोटा, २६ फरवरी २००४

का शासन था। अंग्रेज सरकार की नीति थी कि ठीक तरह से शासन चलाने के लिए हर एक दूसरे के साथ भिड़ाना। इसीलिए किसानो के क्षेत्र में, ग्रामीण क्षेत्र में खेतीहर मजदूरो को बताया कि किसान तुम्हारा दुश्मन है क्योंकि किसान तुम्हे पूरी रोजी रोटी नही दे रहा। शहर के क्षेत्र में, शहर के नागरिको को उपभोक्ताओं को व ग्राहको को सरकार ने बताया कि किसान तुम्हारा दुश्मन है। क्यों ? क्योंकि वह लागत खर्चे के आधार पर लाभकारी मूल्य चाहता है। लागत खर्चे के आधार पर उसको लाभकारी मूल्य दिया तो तुम्हारे ऊपर खर्चे का बोझ बढ जायेगा और तुम्हारा नुकंसान होगा। तो एक तरफ खेतीहर मजदूर और किसान को एक दूसरे से लडाया। दूसरी तरफ शहर के उपभोक्ता और किसानो की लडाई शुरू हो गयी। भारतीय किसान संघ ने कहा कि यह बिल्कुल झूंठ है। स्वाभाविक रूप से तीनों के हितो में सामंजस्य है। क्या रास्ता हो सकता है, वह रास्ता बतायें ? हम ने कहा कि खेती में प्रयुक्त होने वाली जितनी चीजे हो, चाहे पानी हो, बिजली हो, खाद हो, बीज हो, खेती के औजार हों, जितनी चीजे हम खेती में प्रयुक्त करते है उन सबकी मूल में अधिक सहायता दीजिये। सहायता एवं सब्सिडी, मूल सब्सिडी दीजिये। परिणाम क्या होगा ? सहायता एवं सब्सिडी देने के कारण बिजली का खर्चा कम होगा, पानी का खर्चा कम होगा, खाद, बीज आदि का खर्चा कम होगा तो लागत खर्चा कम हो जायेगा। कुल मिलाकर यदि लागत खर्चा कम हो जाता है तो किसान के लिए यह आसान होगा कि अपना माल शहर में जाकर बेचते समय, शहर के उपभोक्ताओं और ग्राहको पर ज्यादा बोझ नही पड़ते हुये, किस तरह से लाभकारी मूल्य हम ले सकते है, यह किसान के लिए संभव होगा। तो इसमें शहर का उपभोक्ता और किसानो के बीच में जो झगडे है, वह बंद हो जायेंगें। और फिर जब किसान को अपने माल की पूरी कीमत मिलती है तो बड़ी खुशी से किसान अपने खेतीहर मजदूरो को उसकी पूरी रोजी रोटी देने के लिए तैयार होगा। मैं नहीं समझता कि कोई किसान ऐसा होगा जो अपने खेतीहर मजदूरो को अपना दुश्मन समझता होगा। किसान यह सोचता है कि वह उन्हे पूरी रोजी रोटी नहीं दे सकता है, यह बात सही है, किन्तु क्यों नही दे सकता ? वह सोचता है कि जब मुझे मेरे माल की पूरी

कीमत नही मिल रही और इसके कारण में अपने बाल–बच्चों का पेट नही पाल सकता तो खेतीहर मजदूरो को पूरी रोजी कैसे दूँगा। मेरी पूरी रोजी देने की इच्छा नही, ऐसा नही है। पूरी रोजी देनें की ताकत नही है, हैसियत नही, इसके कारण मैं पूरी रोजी नही दे सकता। लेकिन जब उसको लाभकारी मूल्य मिल जायेगा तो बडी खुशी से वह अपने खेतीहर मजदूरो को पूरी रोजी देगा और किसानों व मजदूरो के बीच झगड़ा समाप्त हो जायेगा। यह रास्ता हमने दिखाया लेकिन सरकार ही रास्ते पर चलने के लिए तैयार नही है, सरकार तो अंग्रेजो के समय जो बात चल रही थी, उसी को चला रही है। इसका कारण क्या है ? विदेशी गोरे लोगो के दबाव में आकर सरकार किसान विरोधी नीति अपना रही है। हम राष्ट्र को अपना आराध्य देवता मानते हैं और राष्ट्र की स्वतंत्रता व सम्प्रभुता कायम रखनी चाहिए, ऐसा हमारा विचार है। किन्तु दुर्भाग्य से एक के बाद एक सरकारें आयी वह किसी न किसी कारण से विदेशी गोरे विकसित देशो के दबाव में आती रही और इसी का कारण है कि सरकार की नीतियाँ किसान विरोधी रही। हम राजनैतिक नहीं, हम तो भगवान बलराम के भक्त है, आप जानते हैं कि महाभारत के युद्व में हिन्दुस्थान का हर एक योद्धा, हर एक राजा या तो कौरवों के पक्ष में, या पांडवो के पक्ष में लड रहा था। अकेले भगवान बलराम ऐसे थे जिन्होने इस युद्व में हिस्सा नही लिया। यदि सरकार किसान या राष्ट्र विरोधी मांग करती है तो इसका विरोध करेगें। हुकूमत ने हम पर विचार नही किया। किसानों के इसी दबाव के कारण पिछले विश्व व्यापार संघटन के लिए किसानों ने जो बोला, वही बोलना भारत सरकार के प्रतिनिधि अरूण जेटली के लिए बाध्य हो गया। हमारी भूमिका इनको कहां तक जंचती है, यह सवाल नही। किंतु दबाव इतना है कि अखिल भारतीय स्तर पर प्रदर्शन हुये, प्रादेशिक स्तर पर, जिला स्तर पर यात्रायें निकली। दबाव बहुत आ गया, तब जाकर सरकार ने कहा कि हमारे अरूण जेटली जा रहे हैं। उनको बताये कि किसान क्या चाहता है, जो किसान चाहेगा वही अरूण जेटली बोलेगें और ऐसा ही हुआ। विश्व व्यापार संघटन शुरू होने के पश्चात् पहली ही बार सरकार के प्रतिनिधि अरूण जेटली ने वही बात कही जो उनको कानकुन में भी बोलना चाहिए

था। यह किसान संघ की बहुत बडी जीत थी, ऐसा मैं समझता हूँ। मैं यह नही मानता कि सरकार का हृदय परिवर्तन हुआ। क्योंकि दबाव बहुत आने के कारण हमारी भूमिका लेनी पडी। यदि दबाव कम हो जायेगा तो सरकार हमारी भूमिका छोड भी सकती है। भारतीय किसान संघ सभी प्रदेशो में विश्व व्यापार संगठन के विषय में, बाकी मांगो के विषय में जन–जागरण कर रहा है। इस समय अखिल भारतीय मांग पत्र तैयार हुआ है, इस मांग पत्र के साथ प्रादेशिक मांग पत्र, स्थानीय मांग पत्र को भी जोड़ा जायेगा और किसान संघ क्या चाहता है यह बताया जायेगा। इससे आप लोगो को समझने में आया होगा कि किसान संघ की भूमिका क्या है ? वह क्या चाहता है ? किसान संघ करोड़ों किसानों का समूह है जो अपनी ताकत को भूल गया है। वास्तव में इतनी बडी संख्या किसानों की है। वह चाहे जिस सरकार को सता में ला सकते है और चाहे जिस सरकार को हटा सकते है, ऐसी वास्तविकता है, लेकिन वास्तव में किसानों को अपनी ताकत का अंदाजा नही है।

अन्य संस्थायें कहती है कि यह हमारा नेता है, इसके आवास पर आ जाओं। हम किसी को भी अपना नेता नही मानते, हर किसान हमारा नेता है। देश के हर किसान को अपनी समस्या समझने के लिये जागरूक करना, प्रशिक्षित करना, अपनी समस्या समझकर उसके बारे में सोचने के लिये सक्षम करना है। इस तरह से हर किसान में नेता बनने की क्षमता का निर्माण करना, यह हमारा काम है। हर स्तर पर सामूहिक नेतृत्व निर्माण होता है। हमारी अन्य संस्थाओं सें भिन्न कार्य पद्वति है यह आपको समझ में आया होगा। यहां एक नेता का जन्मदिन नही है, सभी किसान अपने–अपने क्षैत्र का नेतृत्व करने के लिए सक्षम हो जाये, और ऐसे सक्षम किसान विभिन्न स्तरों पर ग्राम के स्तर पर, मण्डल स्तर पर, प्रदेश स्तर पर समय–समय पर एकत्रित होकर आज की स्थिति और समस्या के बारे में विचार विमर्श करें और विचार करने के बाद जो सामूहिक निर्णय निकलता है, उसके अनुसार काम करें। सामूहिक नेतृत्व निर्माण करने वाला भारतीय किसान संघ अकेला संगठन है। इस तरह से अपनी विशेषताओं को लेकर हम काम कर रहे है। किसान संघ किसानों की क्षमता बढाना चाहता है, हर

किसान में नेतृत्व गुण का विकास करना चाहता है। हर किसान हमारा नेता हो, यह हमारा नारा है। किसानो को अपनी ताकत को समझना है। आज स्थिति क्या है ? किसानों के कारण ही लोग सरकार में आ तो सकते है, किंतु सरकार में आने के बाद लोग यह भूल जाते है कि हमें सरकार में किसने लाया। हमारें यहां दो तरह की सरकारें है– एक स्थायी सरकार जिसमें सेक्रेटरी, ऑफिसर, ब्यूरोक्रेटिक आदि आते है। दूसरी अस्थायी सरकार जिसमें हर चुनाव के बाद आने वाले–जाने वाले मंत्री शामिल है। इन मंत्रियों को पता नही रहता कि क्या समस्यां है, और जो स्थायी सरकार है सेक्रेटरी, ऑफिसर, ब्यूरोक्रेटिक वह समझते है कि ये मंत्री लोग कुछ नहीं समझते है, हम जो कहेगें उसी पर हस्ताक्षर करना पडेगा। यह दो तरह की सरकारें है। जब किसान जागरूक हो जायेगा तब ना तो मंत्री की ताकत रहेगी और ना ही ब्यूरोक्रेटिक की ताकत रहेगी। किसान की ताकत का एहसास और विश्वास, किसानों की नींव का निर्माण है। आपने रामायण में सुना है – सीता की खोज करते–करते सारे वानर हनुमान जी के साथ समुद्र के किनारे गये तथा विचार किया कि सीता जी की खोज कैसे की जाये ? इस इतने बडे महासागर को कैसे पार किसा जाये ? और निराश व हताश होकर बैठ गये। तब जामवन्त सामने आये और उन्होंने हनुमान जी से कहा कि हे हनुमान, तू अपनी ताकत भूल गया है, अरे तू तो वह है कि तूझे भूख लगी और सूरज को लड्डू समझकर उसकों खोजने का प्रयास करने लगा। ऐसे ही सूरज की तरह सागर के लिये प्रयास करेगें। हनुमान जी को आत्म साक्षात्कार हुआ, और आत्म साक्षात्कार के कारण उन्होने सागर पार किया। बाकी सारा इतिहास आपको पता है।

भारतीय किसान संघ ने जन–आन्दोलन का काम किया। हम ऐसा समझते है कि भारतीय किसान संघ अपने नेतृत्व की क्षमता रखेगा तो देशी–विदेशी सरकारें किसान के सामने झुक जायेगी। हम जानते है कि आज गोरे लोगो का यह प्रयास चल रहा है कि पूरे विश्व पर उनका आर्थिक साम्राज्य हो। गोरे लोगो के देशो के हितों के लिये सारी दुनिया के देशों का शोषण किया जाये, यह उनका विचार है। और इसे वैश्वीकरण कहते है। किंतु हमारी सरकार समझती नहीं और उनके कहने पर चलती रहती है।

इसी साल २ सितम्बर को जब दिल्ली में किसानों का प्रदर्शन हुआ तो दबाव में आकर किसानों की बात सरकार ने विश्व व्यापार संगठन में कही। लेकिन ऐसा ही चलता रहे इसलिए आवश्यक है कि हम दबाव कायम रखें। और सब दृष्टि से भारतीय किसान संघ का काम हर क्षैत्र में हर जगह बढता रहना चाहिए, तभी दबाव रहेगा। इसी दृष्टि से हमने सोचा है कि रजत जयंती वर्ष सम्मेलन के समय हम एक मांग पत्र तैयार करेगें जिसे सभी जगह वितरित किया जायेगा। हमारे कार्यकर्ता सब जगह जाकर भारतीय किसान संघ का सन्देश देगें। इस सन्देश के आधार पर किसानों को खडा करेगें, तब किसानों को दबाने का साहस कोई नही करेगा।

आज हमारी ताकत है, फिर भी कम है। यह अखिल भारतीय स्वरूप है। यह एक वट वृक्ष के समान फैला है तो भी ताकत कम है। इसलिए मांग पत्र तैयार करेगें। मांग पत्र का मतलब होता है भीख मांगना कि फिर हमारी मांगे पूरी करों। किंतु जब रजत जयंती वर्ष कार्यक्रम के आधार पर सारे किसान संगठित हो जायेगें, तो हमारी ताकत बढ जायेगी। फिर हम सरकार के सामने मांग पत्र लेकर नही जायेगें, बल्कि आदेश पत्र लेकर जायेगें और कहेगें कि भारत का किसान सरकार को आदेश दे रहा है। क्योंकि हम राजनीतिक नहीं, हम सत्ता में नहीं आना चाहते। यह राजसत्ता नाम का बडा हाथी है, जिसके गण्डस्थल पर किसान बैठा है। और यदि हाथी अच्छा चलता है तो किसान उसका सहयोग करेगा। लेकिन यदि हाथी गडबड करता है तो किसान अपना अंकुश उसके गण्डस्थल पर दबायेगा और चीं–चीं करता हुआ हाथी नीचे बैठेगा। अंकुश का काम भारतीय किसान संघ कर रहा है और यही भूमिका हमें आखिर तक निभानी है। यह सब ध्यान में रखकर राजस्थान व कोटा के किसान बन्धु जिन्होने भारतीय किसान संघ को निभाने में सहयोग किया है वह धन्यवाद के पात्र हैं। किसानों को अभिमान व गर्व होना चाहिये कि हमने इस अखिल भारतीय संगठन का निर्माण किया है।

किसान गंगोत्री की कथा

- संकटा प्रसाद सिंह

भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय स्वरूप का कार्य ४ मार्च को कोटा में शुरू हुआ, उस कार्यक्रम में सम्पूर्ण देश का कश्मीर से केरल तक गुजरात से असम तक के किसान आये थे। आसाम के रमेश जी के नेतृत्व में चार बन्धु जो उत्तरप्रदेश के थे, जो आसाम में रहकर खेती करते थे। कार्यक्रम में ६५० प्रतिनिधि आये थे। भारतीय किसान संघ का कार्य देशभर में गति पकडे, इस दृष्टि से कार्यकर्ताओं का प्रयास प्रारम्भ हुआ। माननीय भाऊ साहब मध्यभारत में औरंगाबाद जिले के रहने वाले थे। बहुत वर्षो तक उनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनके स्थान पर अब माननीय सुरेश राव जी हैं। अखिल भारतीय अध्यक्ष पुरूषोतम दास जी भाटिया उतरप्रदेश बरेली जिले के गांव जुगरूनगर के रहने वाले है, जो इससे पूर्व पाकिस्तान में निवास करते थे। १६५१ में विभाजन के बाद कठिनाइयों से भारत आये थे। यहां आकर उन्होने खेती की, यह उनका मुख्य धंधा था। जब वह सरादीजुबा, पाकिस्तान में थे तो सरकारी सेवा में तहसीलदार थे। उनके परिवार के सदस्य वर्तमान में गुजरात में रहते है और उन सबका सम्पर्क आज भारतीय किसान संघ से है। उसके बाद दूसरे अध्यक्ष सरदार प्यारासिंह जी हुये जिनके नेतृत्व में १६८६–८७ में गुजरात का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। देश में सबसे पहले और सबसे अद्वितीय उदाहरण जिसका है, उनका परिवार गांधीनगर में निवास करता है। वह ४६०२ कार्यकर्ताओं के साथ बंदी होकर जेल में थे। आन्दोलन सफल होने के कारण शासन को झुकना पडा तथा उस समय एक इतिहास निर्माण हुआ। जिस समय लोग जेलों में से छूटते थे और छूटने की सूचना का सन्देश ५ बजे भी पहुँचता था तो हम पांच बजे पहुँच जाते थे। ४६०२ कार्यकर्ताओं के साथ जब प्यारासिंह जेल से रात्री को साढे ग्यारह बजे छोडे गये, और कार्यकर्ताओं

---

* अखिल भारतीय रजत जयन्ती प्रतिनिधि सभा में उद्‌बोधन विवेकानन्द विद्यालय कोटा २८ फरवरी ०४

को जहां–जहां पहुँचाना था वहां पहुँचाने की व्यवस्था की गई। उस समय भी भारतीय किसान संघ के प्रभावी कार्यक्रम के कारण शासन को झुकना पडा। उसके बाद कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में अन्ना साहब कदम पाटिल जो महाराष्ट्र के थे तथा उसके बाद आज जो अध्यक्ष है वह हमारा मार्गदर्शन कर रहे है। प्रारम्भ में जो वर्षो तक महामंत्री थे श्यामसुन्दर जी उतरप्रदेश में हरदोई जिले के जखांवा गांव के निवासी है। शरीर की दुर्बलता के कारण प्रवास होना कठिन है। पिछली बार जो प्रतिनिधि सभा लखनउ में हुई थी। प्रतिनिधि सभा में ४११ जिलों से कार्यकर्ता लखनउ आये। वहां उन सबका सम्मान किया गया। सबके दर्शन करने के विचार से वह वहां आये। कार्य की दृष्टि से उनसे परामर्श लेना तो संभव है लेकिन प्रवास करने में सक्षम नही हैं।

भारतीय किसान संघ का कार्य जिस समय सारे देश में चल रहा था, यहां जब सम्मेलन हुआ था तो उसकी ईकाई प्रारम्भ हुई। उस सम्मेलन के पूर्व अपने देश में भिन्न–भिन्न प्रान्तों के कार्यकर्ताओं ने अलग–अलग नामों से किसानों का संघटन तैयार किया था। सम्पूर्ण उतरप्रदेश व उतरांचल मिलाकर भारतीय किसान परिषद के नाम से संघटन चल रहा था। उसी प्रकार गुजरात में खेडूत समाज संघटन का कार्य प्रारम्भ हुआ था। महाराष्ट्र में शेतकरी संघटन करके बाद में शंख जोशी ने अपना लिया था। भारतीय किसान संघ का जो संघटन है, वह शेतकरी संघटन के नाम से प्रारम्भ हुआ। सम्पूर्ण दक्षिण भारत के सभी प्रान्तों में रैयत संघ करके कार्य आरम्भ हुआ था। इसी तरह से अलग–अलग नामों से देश के अन्दर कार्यकर्ताओं ने किसानों को संघटित करके किसान संघ को खडा करने का प्रयास किया। १९२८ में जब माननीय दत्तोपंत जी ठेगडी ने किसान संघ को सहयोग करना प्रारम्भ किया तब से ही किसानों का संघटन सारे देश में खडा हो गया। इस प्रकार की योजना निश्चित करके भिन्न–भिन्न प्रकार की नामावली ध्यान में रखकर संघटन चल रहे थे। कार्यकर्ताओं व किसानों से भेंट करते हुए यहां उस समय सम्मेलन आयोजित किया था। उस समय लक्ष्मण सिंह जी शेखावत सम्पूर्ण राजस्थान के संघटन मंत्री थे, जो अब नहीं रहे। उन्होंने यहां पर सम्मेलन करने की दृष्टि से योजना स्वीकार की।

उसमें एक शर्त थी कि हम तीन लोग, श्यामसुन्दर जी द्विवेदी, मान्यवर ठेंगडी जी और मैं हम तीनों यहां पर कम से कम ८ दिन पहले रहेगें तो हम सम्मेलन को संभाल लेगें। हम लोग ८ दिन पहले ही कोटा में आ गये थे। कार्य कुछ भी नही था, केवल जो कुछ भी कार्य चल रहा था, उनको देख लिया करते थे, बाकी सब वे ही करते थे। उनका कहना था कि मुझे संतोष रहता था कि जो कुछ भी मैं योजना बना रहा हूँ वह उचित है। इस प्रकार से विभिन्न प्रकार के संघटनों को जोडकर १९८६ में ४, ५ मार्च को सभी कार्यकर्तागण यहां आये। उसके पश्चात् प्रारम्भ से ही किसान संघ को जिस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पडा उनमें से पहला मुकाबला तो प्रकृति से हुआ। जितने भी प्रतिनिधि यहां आये थे, उनमें से किसी ने भी ऐसा नही सोचा कि वहां राजस्थान में सर्दी होगी, वहां रेगिस्तान है और मार्च का महीना है, प्रचण्ड गर्मी थी और इसलिए ओढ़ने की आवश्यकता हुई ही नही, सामान्य बिस्तर लेकर आये थे। दशहरा मैदान जहां वर्तमान में चमक–दमक है, वहां पहले ऐसी चमक–दमक नहीं थी। साधारण सा कोटा शहर था और छोटे–छोटे मकान थे। पहले विशाल भूखण्ड था लेकिन इस समय अतिक्रमण के कारण छोटा हो गया। वहीं पर टेन्ट लगाकर व्यवस्था बनी, बस लोग रात्री को भोजन करके ३ तारीख को शयन करने के लिये गये। रात को इतनी जोर से पानी, ठण्डक एक साथ सबका प्रकोप सारे सम्मेलन के ऊपर हुआ। कार्यकर्ता आराम से सो रहे थे। सब लोगों को सूचना दी कि पास में ही एक मंदिर है, उस मंदिर में चलकर जहां–जहां जिसको जगह मिलती है, वहां सब लोग सोयेगें। वहां सब लोग खडे के खडे रहे क्योकिं वहा सोना संभव नही था। इतनी जगह नही थी। लेकिन उसी समय लक्ष्मण सिंह जी शेखावत ने पास ही में एक कॉलोनी थी उसमें क्वार्टर्स बनी हुई थी। और फिर रात्री में सब लोग सुबह होते–होते वहां पहुँच गये। इसके बाद दो दिन शेष थे, उन दो दिन ४ व ५ मार्च को प्रकृति की ओर से किसी प्रकार की कठिनाई नही आई तो लोगो की ओर से कठिनाई आना शुरू हुआ। पहले स्थिति इस प्रकार की आई कि उतरप्रदेश के नाम पर मथुरा जिले के रहने वाले हम १३ प्रतिनिधि आये है। हम भारतीय किसान संघ को बडा अच्छा समझते है, हम प्रतिनिधि बनेगें।

उस समय प्रतिनिधि शुल्क व भोजन शुल्क मिलाकर १० रूपये शुल्क था। आज तो १५ रूपये भोजन शुल्क व ३५ रूपये व्यवस्था शुल्क मिलाकर ५० रूपये शुल्क है। उन्होने १३ लोगो के १३० रूपये कार्यालय में रखे और कहा कि हमको प्रतिनिधि बनाओं। ध्वनिवर्धक से सूचना मिली कि यहां १३ लोग आये हुये है, मैं आकर के देखूं कि कौन है ? जिसकों मैने आग्रह किया वही लोग आये है। आप लोगो की तो कोई सम्पर्क नही आप यहां कैसे आये है। पर फिर भी आये है तो ठीक है। खुला कार्यक्रम जब होगा तो आप उसमें भाग लेना। परन्तु प्रति–निधि के रूप में आप इसमें नही रहं सकते। उन्होने कहा कि हम नही रहेगें तो क्या आप कार्यक्रम कर लेगें। हमने कहा अभी तो आप १३ है अभी यही पर चटनी बन जायेगी। अभी तो आप जाइये और जो भी आपकी ताकत हो उसको लेकर आइये। हम फिर आपका जो आक्रमण होगा उसको देखेगें। अच्छा जाते है यह कहकर गये, लेकिन आज तक लौटे नही। बाद में पता चला कि वह सोशलिस्ट थे और हरियाणा से जुडा जो क्षैत्र है वहां के रहने वाले थे। वह कुछ न कुछ विघ्न खडा करने का प्रयत्न कर रहे थे। उनका प्रयास था कि जिस समय वार्ता होगी उस समय हडकंप मचायेगें।

उसके बाद यहां पर कम्युनिस्ट पार्टी के २६ लोग सम्मेलन आ गये और इधर–उधर खड़े हो गये। जिस समय सत्र पूर्ण हुआ, बीच में थोडा अवकाश था आधे पौन घण्टे का। उस अवकाश में किसानों को यह कहने लगे कि यहां तो कोई किसान आया ही नही। किसान क्या कहीं सफेदपोश होता है ? किसान तो बिल्कुल दीन–हीन स्थिति में होता है। यहाँ कोई किसान नही, मुझको पता लगा। मैने पूछा कौन है ? उन्होंने कहा कि हम किसान है। किसानों का यहां सम्मेलन हो रहा है, इसलिये सम्मेलन में आये है। यहां आने के बाद हमने देखा कि यहां कोई किसान ही नही। हमने कहा कि आप किसान है। उन्होने कहा हां देखो। उन्होने दोनो हाथ फैलाकर दिखाये। मैनें कहा कि यह किसान का हाथ तो नही दिख रहा है, यह तो घन पीटने वालों के हाथ है। उनमें से एक बोला कि भईया खूब समझे यह वर्कशॉप पर काम करते है। यहां पर रेल्वे की वर्कशॉप थी, उसमें इन्टक यूनियन के सब लोग थे और वहां पर ये घन पीटने का काम करते थे। जो

२६ लोग के साथ यहां आकर किसानों को इस प्रकार भडका रहे थे। किसानों का आन्दोलन या सम्मेलन किसानों का संघटन नही है। यहां सब लोगो को धोखा दिया जा रहा है। इस प्रकार की उनकी वाणी थी। वह जैसे थे, उनके साथ वैसा ही बर्ताव करने की स्थिति आयी। और फिर वह सब २६ लोग इस तरह भागे कि फिर नही आये। इस सम्मेलन में ऐसे भी कुछ प्रतिनिधि आये जो यह समझते थे कि यह कोई नया संघटन बन रहा है, इस पर हम कब्जा कर लेगें और वह आपस में इस प्रकार का गुट बनाकर आंये। जो किसान संघटन से जुड़ा है और जो प्रतिनिधि बनकर आये थे, आज जो उधमसिंहनगर जिला बन गया है, उतरांचल में जो नेनिताल से कट कर उसके रहने वाले थे। गोविन्दराम शर्मा नाम था, एक इस प्रकार की योजना बनाई कि मैं इस योग्य हूँ कि मैं अध्यक्ष बनूं। और उन्होंने इस प्रकार का प्रयत्न किया। माननीय ठेंगडी जी को रोके हुये उनसे वार्ता कर रहे थे। उन्होनें कहा कि मैं योग्य हूँ, मैं अध्यक्ष बनूं। मैने कहा आप चलिए और मण्डप में बैठिये। जिस समय अध्यक्ष का चुनाव होगा, उस समय प्रस्ताव रखा जायेगा, समर्थन होगा, अनुमोदन होगा, आप भी प्रत्याशी के रूप में इसमें शामिल हो जायेगें। आपको अगर समर्थन और बहुमत मिलेगा तो आप अध्यक्ष चुने जायेगें। वो समझते थे कि मैं योग्य हूँ कौन इस प्रकार का होगा ? बाकी उनका जो गुट था उनमें भी किसी की भी हिम्मत नही हुई। फिर एक ने उनका प्रस्ताव किया। इसके बाद निर्वाचन प्रमुख ने उनसे पूछा कि और किसी का समर्थन आया, नहीं। पुरूषोत्तमदास भाटिया का भी प्रस्ताव, समर्थन और अनुमोदन था। गोविन्दलाल शर्मा का प्रस्ताव तो किसी तरह आ गया। जिन्होने बाद में गलती स्वीकार की कि मैने तो ऐसे ही नाम डाल दिया कि कम से कम दो प्रत्याशी तो रहे। लेकिन न तो उनका कोई समर्थक था और ना ही कोई अनुमोदक। फिर भी बिना समर्थन के ही वह खडे हो गये। अप्रसन्न होकर उन्होने कहा कि अब मैं नही रूकूंगा। उनसे रूकने का आग्रह भी किया लेकिन वह नही मानें। न रूकते हुये वह कोटा स्टेशन चले आये। यहां से कार्यक्रम समाप्त होने के बाद देखा कि शर्मा जी गये नही। उन्होने कहा कि कैसे जांऊ, बडी भीड है, पैसे देने पर भी आरक्षण नही मिला। मैंने लक्ष्मणसिंह जी से कहा और तुरंत उसी समय

आरक्षण मिल गया। उन्होने कहा कि मैने ऐसी कल्पना भी नही की थी कि किसान संघ के इतने प्रभावशाली कार्यकर्ता होगें। हमने कहा कि आप क्या समझते थे कि आप ही सब कुछ है। उसके बाद परिस्थितियां इस प्रकार की आयी कि सभी प्रान्तों के अन्दर किसानों के बीच में कार्य करने वाले बन्धु लोग किसान संघ के पास आकर कहते कि मैं एक किसान संघ का बहुत अच्छा कार्यकर्ता हूँ और मुझको उसमें लगाया जाये। लेकिन एक प्रश्न रहता था कि हमें जब इसमें मिलाया जायेगा तो पद क्या मिलेगा। भारतीय किसान संघ का एक ही उत्तर था कि नं तो इसमें कोई पद है और ना ही फण्ड है। परिश्रम करो, धन संग्रह करों और कार्य करो, उसके अनुसार दायित्व मिलेगा, पद मिलेगा। लेकिन यदि भारतीय किसान संघ में पद मिलने के लिये तुम कार्य करोगें तो यहां कोई जगह नही है। सम्पूर्ण देश में जितने भी इस प्रकार के लोग थे, थोडे दिन रगड़ घीस करने के बाद धीरे–धीरे बैठते चले गये। इस स्थिति में भारतीय किसान संघ का कार्य आगे चलने लगा। भारतीय किसान संघ की रीति–नीति को ठीक प्रकार से समझकर कार्य करता चला वह आगे बढा। बाकी जितने भी लोग थे वह सब एक–एक करके पीछे चलते गये। आज निर्जीव है, मृत है, लेकिन उनकी कहीं पर कोई पूंछ नही है। जिनके पास भाषा रहती थी कि आप से अगर क्षैत्र में मिलने के लिए कहेगें तो आप कैसे मिलेगें। वे कहते थे कि बस आकर कह देना कि नेता जी से भेंट करना है कोई भी बता देगा। प्रश्न उठा कि जिले भर के लोग भी। उन्होने कहा कि जिले भर के लोग भी जहां–जहां भी जाओगें, कोई भी बता देगा। ऐसी बाते नेताजी की रहती थी, लेकिन अब समाप्त हो गयी। भारतीय किसान संघ के कार्य की दृष्टि से हम आगे बढते गये। हम लोग उसकों काफी दिनों से कार्यरत होने के कारण जान गये। रीति नीति की दृष्टि से एक उदाहरण बता देता हूँ। १९९० में जिस समय फैजाबाद अयोध्या में भारतीय किसान संघ का सम्मेलन था, जिसमें माननीय कुंवर जी भाई जाधव अध्यक्ष चुने गये थे। उसकी एक शोभायात्र फैजाबाद से रामजन्म भूमि तक जानी थी। ८ किमी का मार्ग था। माननीय दत्तोपन्त जी उसका नेतृत्व करने वाले थे तथा पहले ही सब लोगो को सूचित था। लेकिन वहां पर सरकारी अवरोध के

रूप में राजीव गांधी थे। उस समय उतरप्रदेश में भी कांग्रेस मंत्रीमण्डल था। सरकार की ओर से किसी भी प्रकार का कोई सहयोग नही था। उनका कहना था कि सम्मेलन तो ठीक है, लेकिन शोभायात्रा नहीं निकल सकती। १३ वर्षो से यहां कोई शोभा यात्रा नही निकली। यह शासन की बोली थी। लेकिन फिर भी शोभायात्रा निकली। जब शोभायात्रा चल रही थी तो आई. जी., डी.आई.जी., कलक्टर, कप्तान, डिप्टी, एस.पी. सब लोग चल रहे थे। ऐसा मालूम हो रहा कि मिलिट्री के घेरे में जा रहे है। जब उद्घोष सुना कि "अन्न के हम भण्डार भरेंगें, लेकिन कीमत पूरी लेगें" "जो हमसे टकरायेगा, वह हममें ही मिल जायेगा"। इस प्रकार के उद्घोष थे। शोभायात्र के बाद सम्मेलन स्थल पर जो भोजन बनाने वाले थे, वह सब चले गये थे। केवल अकेला मैं ही रह गया था। डी.एस.पी. आये। उन्होने कहा कि सिंह साहब कहां है। हमने बोला – कहिए हम ही है। तो उन्होने कहा कि आप को कलेक्ट्रर, कप्तान, आई.जी., डी.आई.जी. सब लोगो ने सन्देश भेजा है कि यह शोभायात्रा निकली बहुत अच्छा हुआ। हमने कहा कि पहले तो इसका विरोध हो रहा था, अब अच्छा क्या हो गया ? उन्होने कहा कि अभी तक तो जो नारा सुना था "जो हमसे टकरायेगा, चूर–चूर हो जायेगा" यहां नारा लग रहा है कि "जो हमसे टकरायेगा, वो हमसे मिल जायेगा" पहले नारा लगता था कि " हमारी मांगे पूरी करो, चाहे जो मजबूरी हो" अब यह नारा लग रहा है कि "अन्न के हम भण्डार भरेगें, लेकिन कीमत पूरी लेगें" कितना सार्थक नारा है। और सब गद्गद् है कि कार्यक्रम कितना अच्छा था, इसे रोकना ठीक नही था। इस प्रकार की उपलब्धि थी, कार्यकर्ताओं के व्यवहार से और उसके बाद एक चीज और थी जिसका भारतीय किसान संघ पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है, कही राजस्थानी में, कहीं कन्नड में, मराठी में, तेलगू में, तमिल में, मलयालम में, उडिया में, बंगाली में सब भाषाओं के गीत गाते व नारे लगाते हुए जब जा रहे थे तो ऐसा प्रकट हो रहा था कि भारत वर्ष यहां पर एकत्रित है, और इसलिए इसका यहां पर एक बहुत बडा प्रभाव खडा हुआ। दूसरी एक स्थिति इस प्रकार की थी कि पास ही में डेढ सौ घर की आबादी का एक खानाबदोश लोगो का समूह था। सब लोगो ने पहले यह कहा कि सम्मेलन

ऐसी जगह है कि आप भयभीत हो जायेगें। मैने कहा क्यों ? उन्होने कहा – जो यह सामान आप को दिख रहा है, जब आपका यह कार्यक्रम चलता रहेगा तो सब सामान उड जायेगा। किसी की अटैची–पटैची नही रहेगी। हमने कहा कि कमरे का सामान भी। वह बोले नहीं, जो बाहर है वह सामान। राजस्थान के सब लोग बाहर ही थे। बाकी थोडे बहुत और प्रान्तों के भी थे। संख्या ज्यादा थी। विद्यालय में ठसमठस ७००० लोगो का रहना नही हो सकता था इसलिए बाहर रहना स्वाभाविक था। और स्थिति यह आई कि ऐसी कोई दुर्घटना तो हुई नही, जब लोग शोभायात्रा में चल दिये, उसमें १५० परिवारों के लोग जो थे स्त्री – पुरूष वहां आ गये और मैं अकेला वहां पर था। मैने सोचा सब लोग जो बता रहे थे वहीं होगा क्या ? मैने कहा भईया, कैसे आये ? उन्होने कहा कि सब लोग चले गये क्या ? हमने कहा कि हां, सब लोग रामजन्म भूमि के दर्शन करने चले गये। उन्होने कहा कि हम लोग तो उनके दर्शन करने के लिये, उनके पांवों की धूल लेने के लिए आये थे। हमने कहा कि क्यों ? तो वह बोले, सुना है कि चारो धाम से यहां लोग आये है हम गरीब है, हम तो चारो धाम जा ही नही सकते। लेकिन यहां लोग बद्रीनाथ, द्वारिका, जगन्नाथ व रामेश्वर से आये है। तो इनके चरण रज अपने माथे पर रगड लेगें तो हम समझेगें कि हम चारो धाम हो आये। यह पवित्र भाव सुनकर मैंने कहा कि सब लोग रामजन्मभूमि के दर्शन कर आयेगें। कल चार बजे तक यहां रहेगें फिर जायेगें। दूसरे दिन सम्मेलन समाप्त हो गया तो वे लोग पहले ही जाकर मार्ग के दोनो ओर खडे हो गये। जब लोग जा रहे थ तो उनके चरणों की धूल लेकर माथे पर रगड रहे थे। चारों धाम की यात्रा पूरी हुई। इस प्रकार का भाव उन लोगो में था। जिनके लिये यह समझते थे कि कोई सामान की रक्षा करें, जब लोग जायेगें। इस प्रकार केवल पुलिस के मन का ही परिवर्तन नही हुआ बल्कि इन लोगो के मन का भी परिवर्तन हुआ। और इस प्रकार का भाव, इस प्रकार की पवित्रता भारतीय किसान संघ से होती थी। इससे भारतीय किसान संघ का कार्यक्रम कितना पवित्र है, यह हमारे व्यवहार, आचरण, सोच, कर्मठता, कुशलता, समर्पण के कारण है। यह बात ध्यान में रखकर मैंने जो थोडा संक्षेप में जो विवरण दिया, उसे ध्यान में

रखे। और उत्साह पूर्वक इस कार्य को इसी वर्ष में पूरा करें। आगे जो योजना हम बनाने वाले है, ऐसी प्रभावी योजना जो देश के कोने–कोने तक गूंजे ही। इसके अतिरिक्त जो लोग है उनको भी पता चल जायेगा कि भारतीय किसान संघ इस नाम से जो देश के अन्दर संघटन चलता है उसके कार्यकर्ताओं, मार्गदर्शकों, नेताओं का किसानों के लिये जो मार्गदर्शन व प्रयत्न है वह निश्चितरूप से यशस्वी रहकर सारे देश को खुशहाल बनाने में समर्थ होगा। यह जो उसकी वाणी है वह निश्चित रूप से साकार रूप ग्रहण करेगी। इस प्रकार का विश्वास, पहचान देश में सारे देशवासियों को हो सके ऐसी महत्वकांक्षी योजना हम बनायेगें और उसको कर्मठता से पूरी करने के लिये प्रयत्नशील रहेगें। इस प्रकार का संकल्प धारण करें।

सावधान रहें, जागते रहें, बढ़ते रहे

- दत्तोपंत जी ठेंगड़ी

यह रजत जयन्ती वर्ष है शायद ही किसी संस्था में ऐसा हुआ होगा कि जिस भूमि पर संस्था का जन्म हो उसी भूमि पर संस्था का रजत जयन्ती वर्ष मनाया गया हो। यह बात प्राय नही होती लेकिन भारतीय किसान संघ में ऐसा हुआ। यह इस सम्मेलन की विशेषता है। वैसे और भी कुछ विशेषताऐं इस सम्मेलन की है। २५ साल पूर्व किसान संघ शुरू हुआ हमने बताया कि हमारी किसी के साथ कोई स्पर्द्धा नही है, विरोध नही है। हमने किसानों के लिये अच्छा काम किया है। सब नेताओं के बारे में, संस्थाओं के बारे में हम आदर की भावना रखते है। देश में ऐसे कई लोग है जिनका जिक्र मैने अपने भाषण में किया है, उन सबको हम प्रणाम करते है। लेकिन यह भी हम नही भूल सकते कि ये संस्थायें, ये नेता लोग जो काम कर रहे है, ये लगातार नही है। जब कभी संकट उत्पन्न होता है तो हमको दर्द होता है, फिर किसान उठ जाता है तथा उसका सामना करने के लिये नेता जी सामने आते है। भारतीय किसान संघ अकेला संघटन है केवल ईशु होने के कारण ही नही, जब कोई ईशु नही होता, जब संकट नही होता, पेट में पीडा नही होती, फिर भी लगातार सदस्यता करना, समितिया बनाना, संघटन खडा करना, यह विशेषता केवल भारतीय किसान संघ के पास है। दूसरी बात है कि विभिन्न संस्थानों के पश्चात् भारतीय किसान संघ का निर्माण हुआ। हमने कहा कि हम जब संकट खडा होता है तो संघर्ष हम अवश्य करते है। अपनी मांगों के लिये बाकी लोग भी संघर्ष करते है। लेकिन हम यह कह सकते है कि भारतीय किसान संघ के संघर्ष जितने सफल हुए उतने किसी के नही हुए। सबसे नया संघटन व सबसे सफल संघटन भारतीय किसान संघ ही है। हम देखते है कि किसान संघ अनुशासन युक्त है, विशिष्ट नही। लोगों के लिए जो आश्चर्य की बात है वह है हमारे यहां का अनुशासन का दृश्य जो हर जगह देखेगें।

---

* अखिल भारतीय रजत जयन्ती प्रतिनिधि सभा में उद्‌बोधन विवेकानन्द विद्यालय कोटा २८ फरवरी ०४

भारतीय किसान संघ की विशेषता यह है कि इतने वर्षो के बाद एक अखिल भारतीय मांग पत्र तैयार हुआ है। यह इस सम्मेलन की एक विशेषता है। इस मांग पत्र का कैसे उपयोग करना है यह आप समझ लीजिये। मांग पत्र सबको दिया जायेगा। यह अखिल भारतीय स्तर की मांगे है। जिसका प्रचार करना चाहिए। लेकिन प्रचार करते समय एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सर्व साधारण किसान अखिल भारतीय समस्याओं के बारे में उतना चिंतित नही होता जितना स्थानीय और प्रादेशिक समस्याओं के बारें में चिंतित होता है। इसके कारण अपने–अपने प्रदेश में अपनी–अपनी भाषाओं में इस मांग पत्र को वितरित करेगें। इस मांग पत्र के साथ स्थानीय मांग को भी जोडकर उसका प्रचार करें। ताकि किसानों, जनता को, सरकार को, पत्रकारों को पता चले कि भारतीय किसान संघ क्या–क्या चाहता है। इसका विस्तृत वितरण होना चाहिए और जहां–जहां हम जायेगें वहां हमारी भूमिका क्या है, इसके लिये इस मांग पत्र का बहुत उपयोग होगा। यह भी किसान संघ की एक विशेषता है। दूसरी एक विशेषता है कि पिछले सम्मेलन के समय भी किसान महिलाऐं आई थी, किंतु पिछले दिनों में किसान महिलाओं में ज्यादातर जागरण हुआ, ऐसा दिखाई देता है। पहले तो हमारी चन्द्रिका बहन और सुमंगला बहन हाथ पैर हिलाती थी, काम करती थी, महिलाओं को जागरूक करती थी। अब इनके दौरो के कारण प्रादेशिक ईकाई के कारण जगह–जगह किसान महिलाओं में जागृति हो रही है। और इस तरह सबसे बडा प्रमाण कुछ दिन पहले महाराष्ट्र में जो किसान महिला सम्मेलन हुआ था उसमें देखने को मिला। हम लोगो ने सोचा था कि किसान महिला सम्मेलन में ३००–४०० महिलाएँ आयेगी लेकिन वहां १२०० संख्या थी। इससे महिलाओं की जागरूकता का प्रमाण महिला सम्मेलन में दिखायी दिया। हम लोग अब नये जमाने में प्रवेश कर रहे है। चुनाव आ रहे है, चुनावों से हमारा लेना देना कुछ नही। चुनाव के समय हमें गैर राजनीतिक होने के कारण किस तरह का व्यवहार करना चाहिए इसकी सूचना सबको है। लेकिन इस चुनाव का महत्व हम ध्यान में रखे कि चुनाव के बाद कोई भी पार्टी वह सरकार में आती है तो उसकों एक अन्तर्विरोध का मुकाबला करना ही पडेगा। यह अन्तर्विरोध क्या है कि सता का नाता टोप से है। और जब सता टोप पर होती है। तो संघटन का

नीचे जाना प्रारम्भ होता है। यह ठीक है कि ऐसी परिस्थितियां अभी तक नही आयी। थोडे दिन सत्ता में आने के बाद जो सत्ताधारी दल होता है, सबकी सारी मांगे तो पूरी नही कर सकता, उसको समय लगता है। लेकिन यहां परिस्थिति है कि टोप में सता में आ जाना उसी समय संघटन का नीचे जाना शुरू होगा। ऐसी एक विशिष्ट परिस्थिति आने वाली है। अब इस परिस्थिति में जो–जो सरकारे आयेगी चाहे वह केन्द्र में हो या राज्य में हो उनकी नीति क्या रहेगी। वह कई चाल चलेगें। इसका अंदाज लेकर ही हमने अभी से अपने मन की तैयारी रखनी चाहिए।

भारतीय मजदूर संघ १६५५ में प्रारम्भ हुआ। किंतु भारतीय मजदूर संघ का प्रारम्भ और भारतीय किसान संघ का प्रारम्भ इसमें बहुत अन्तर है। २३ जुलाई १६५५ को भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की घोषणा तो हुई, लेकिन भारतीय मजदूर संघ के साथ एक भी यूनियन, कार्यकर्ता, पैसा व सदस्य नहीं था। जीरो से शुरूआत हुई और नीचे से एक–एक ईकाई बनती गई। १६८७ में दिल्ली में अखिल भारतीय पहला अधिवेशन १२ साल के बाद हुआ। जबकि यहां पहले अखिल भारतीय किसान संघ की शुरूआत हुई तथा बाद में उसकी शाखायें शुरू हुई। किंतु भारतीय मजदूर संघ के अनुभव हमारे लिये उपयोगी है। इसमें कोई शक नही कि रजत जयन्ती वर्ष में आप काम बढ़ायेगें। इसके कारण सरकार क्या करेगी यह ध्यान में रखने की बात है। जैसे–जैसे मजदूर संघ का काम बढता गया, फिर धीरे–धीरे सरकार ने मजदूर संघ के लोगो को विभिन्न कमेटियों में भेजना शुरू किया। अर्न्तराष्ट्रीय मजदूर संगठन में हमारे प्रतिनिधि भेजना शुरू किया। विदेश में भी जो सम्मेलन वर्ग सेमीनार होते थे वहां भी मजदूर संघ के लोगो को भेजा। हमारे सामने आर्थिक अनुशासन के प्रश्न का महत्व नहीं था। हर एक ईकाई, यूनियन, फेडरेशन अपना–अपना हिसाब रखती है। अब परिस्थिति यह आई कि आर्थिक अनुशासन हमको मनाना पड़ा। पूरी तरह से आर्थिक अनुशासन भारतीय मजदूर संघ में रहे इसकी चिंता करनी पड़ी। हमारे सामने कठिनाई यह थी कि हमारे कुछ लोगो को हिसाब लिखना भी नहीं आता था। वह लिखते तो थे लेकिन किस तरह से लिखना चाहिए यह उन लोगो को याद नहीं था। जब कमेटियों में जाते तो वहां

कमेटियों की ओर से कुछ भत्ते मिलते थे। प्रवास भत्ते और दैनिक भत्ते मिलते थे। उसके पहले यह सवाल नही था, अब सवाल है तो यह अनुशासन लगाना पडा। कमेटियों में जाने वाले लोगो को ख्याल रखना चाहिए कि अपनी ओर से नही जा रहे है, बल्कि भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के रूप में जा रहे हैं। तो वहां आने वाला जितना पैसा है, प्रवास का भत्ता है, दैनिक भत्ता है, उसका पूरा हिसाब लिखे और वापस आने के बाद पूरा हिसाब तथा जो पैसा बचा उसे केन्द्र कार्यालय में दे दे। भारतीय मजदूर संघ में दो तरह के लौग थे। एक ऐसे थे जिनको अनुशासन की आदत थी, किंतु कई लोग ऐसे थे, जिनको ये आदत नहीं थी। वो सोचने लगे की यह तो हमारा पैसा है लेकिन बाद में उनको कहना पडा कि यह तुम्हारा पैसा नहीं है, बल्कि भारतीय मजदूर संघ का पैसा है इसका हिसाब देना पड़ेगा। कुछ लोगों ने कहा कि हम क्या हिसाब दें, क्या हमारे ऊपर आपका विश्वास नही हैं। हमने उसका जवाब दिया कि यह हिसाब का नही बल्कि व्यवस्था का सवाल है। कुछ लोगो ने कहा कि मजदूर संघ हमे क्या देता है ? प्रवास के लिये हमे ही खर्च करना पडता है और उसका भी हिसाब देना पडता है। हमने कहा कि हो सकता है कि मजदूर संघ आपका पैसा वापस देने की स्थिति में आये या न आये किंतु हमने कितना पैसा कब खर्च किया है इसका हिसाब भारतीय मजदूर संघ के केन्द्र कार्यालय में आना चाहिए। अविश्वास है इसके कारण नहीं, बल्कि व्यवस्था के नातें। हिसाब के बारे में बहुत पर्टीकूलर होने की आवश्यकता है, आजकल लोग पर्टीकूलर रहना भूल गये। इसके कारण गड़बड़िया होती है। भारतीय मजदूर संघ ने इसके लिये विशेष व्यवस्था की है। हमारे एक प्रौढ कार्यकर्ता भाई साहब चान्दना ने फार्मूला बनाया। उसी आधार पर हिसाब लिखना चाहिए और उसी पद्वति को सिखाने के लिये भाई साहब चान्दना ने कई प्रदेशो का दौरा किया। इस पद्वति को सिखाने में ३–४ साल लग गये। उसके बाद हर प्रदेश का हिसाब ठीक है या नही यह देखने के लिये भाई साहब चान्दना का हर प्रदेश में दौरा होता है तथा यह देखा जाता है कि हिसाब ठीक है या नही। यह एक अनुशासन है, जो शुरू हुआ। जो लोग कमेटियों में जाते थे उनको भी कहा गया कि आपको जितना खर्च करना

है करो, हम इसके बारे में नही पूछेगें। किंतु खर्चा करने के बाद जो पैसा बचा, उसका लेखा–जोखा भारतीय मजदूर संघ कार्यालय में देना चाहिए। अब कमेटी में जो लोग रहते है उसमें दो तरह के लोग है। कुछ तो केवल सलाहकार समितियॉ होती है, कुछ बोल्ड होते है कुछ कॉरपोरेट होते है। और आप जानते है कि जब कोई ऋषि तपस्या करते थे, ऋषि तो मोक्ष प्राप्ति के लिये तपस्या करता था, लेकिन जैसे–जैसे तपस्या बढती थी तो इन्द्र का सिंहासन हिलता–डुलता था। और उसकी तपस्या पूरी नही हो इसलिये वह अप्सराओं को भेजा करता थां। वास्तव में उनका राजनीति से कोई सम्बन्ध नही था किंतु यदि उस ऋषि की तपस्या बढ जायेगी तो इन्द्र क्या रह जायेगें ? इसलिए अप्सराओं को भेजते थे। आज सरकार की भी इस प्रकार की पद्वति है। मजदूर संघ में क्या–क्या हुआ ? इसके बारे में किसान संघ को भी सावधान रहना पडेगा। आर्थिक अनुशासन क्या है समझना पडेगा। कुछ कमेटियों में चैयरमेन ऑफ द बोर्ड बनाया जाता है। और वहां सारे बेनिफिट्स मिलते है, हर माह पैसा मिलता है, मोटर कारे मिलती है, बंगला मिलता है, इतना नही तो लाल बत्ती वाली मोटर भी मिलती है। और आजकल तो लाल बत्ती वाली मोटर मिले ऐसे महाभक्त भी बहुत है। यहां जब यह सारा मिलता है तो हमारे सामने एक सवाल आया और भारतीय मजदूर संघ ने नियम किया कि कमेटियों में जाने वाले लोगो की बाते अलग है। जो बोर्ड या कॉर्पोरेशन के चैयरमेन हो गये है, जिसके कारण उन्हे यह सारी सुविधाये मिलेगी तो ऐसे व्यक्ति को आर्थिक अनुशासन ज्ञात है। अपने को मिलने वाला सारा पैसा भारतीय मजदूर संघ के केन्द्र को देना चाहिए।

दूसरी बात लोग चैयरमेन क्यों बनना चाहते है, क्योंकि वहां भी एक प्रतिष्ठा है कि किसानों का मजदूरों का वह कितना भला कर सकेगें। यह अलग बात है कि ऐसे स्थान पर जाने के बाद हम उनके सामने प्रश्न रखते है। एक हमारे महामंत्री थे उनको राज्य सरकार ने बोर्ड का चैयरमेन बना दिया। हमने उनको कहा कि बोर्ड का सारा पैसा मजदूर संघ के पास आना चाहिए। दूसरी बात आप एक ही समय में बोर्ड के चैयरमेन और महामंत्री नही रह सकेगें। या तो आप चैयरमेन रहेंगे या फिर महामंत्री।

इस तरह का सख्त व्यवहार भारतीय मजदूर संघ में होने के कारण हमारे यहां कम से कम सदोष संघटन है। कम से कम सदोष आर्थिक अनुशासन है। ये सारी बाते आपके सामने आने वाली है। क्योंकि चुनाव के बाद कोई भी सरकार द्वारा किसान संघ की तपस्या भंग हो इसलिए अप्सरायें भेजी जाने वाली है। और अप्सराओं के मोह में हमारे कुछ नेता आ भी सकते है। वे न आये इस विषय में सख्त नियम लागू करने की आवश्यकता है। सख्त अनुशासन जब तक नही होगा तब तक संघटन नही चलेगा। आर्थिक अनुशासन की दृष्टि से यह सख्ती बहुत आवश्यक है, और अब धीरे–धीरे सभी जगह यह सख्ती लानी पडेगी। हिसाब रखने की पद्वति क्या है यह सीखना पडेगा। सिखाने की व्यवस्था करेगें। और हर प्रदेश का, हर जिले का जो–जो हिसाब रहेगा वह उस पद्वति से ही आना चाहिए। आर्थिक अनुशासन वर्ष भी इसी वर्ष से शुरू हो गया यह समझ लीजिये। भारतीय मजदूर संघ में पहले प्रादेशिक स्तर पर योजनायें बनती थी, कहीं मकान बनाना है, कहीं कार्यालय बनाना है इसके लिये प्रादेशिक स्तर पर पैसा इकट्टा कर लेते थे तथा उसको खर्च करते थे। चाहे जैसा कार्यालय बना लेते थे। अब आर्थिक अनुशासन में भारतीय मजदूर संघ में यह बात आई कि कहीं भी किसी भी काम के लिये पैसा इकट्टा करने के लिये केन्द्र की अनुमति मांगना होगा। वैसे भी जो स्मारिकायें निकलती है तथा एडवरटाइजमेन्ट का जो अलग–अलग रूप से पैसा आता है तो जितना पैसा ईकाइयों के पास आता है, स्थानीय मण्डल तहसील, जिला प्रदेश से जितना पैसा आता है, उसका एक भाग केन्द्र को देना चाहिए, यह तय हुआ। किंतु केन्द्र के पास तो कोई यूनियन नही है। भारतीय मजदूर संघ के पास एक भी यूनियन नही है। अलग–अलग यूनियन का भारतीय मजदूर संघ से सम्बन्ध है तो सब युनियन को अलग–अलग पैसा लेना चाहिए। इसका अब सब पालन करने लगे। अब हम कह सकते है कि भारतीय मजदूर संघ में आर्थिक अनुशासन आ गया है। यह आर्थिक अनुशासन किसान संघ में आना ही चाहिए। इसमें थोडा समय लगेगा लेकिन यदि यह अनुशासन नही आया तो किसान संघ किसान संघ नही रहेगा और बाकी संस्थाओं व राजनीतिक दलो की तरह हिसाब किताब नही रखने वाली स्थिति हो जायेगी। ऐसा न हो इस बारे में हमें चिंता करनी चाहिए।

एको करल्यो

थांनै कैयां कैयां समझावां रे, एको करल्यो।
एको करल्यो रे भायां, संघटन करल्यो,
कै थांनै कैयां कैया समझावां रे, एको करल्यो।
मोहम्मद गौरी चढ़कर आयो, सोलह बार हरायो।
जयचन्दां के कारण लेकिन, अपनो राज गमायो।
अब तो फूट नै भगावां रे, एको करल्यो।।
कै थानै कैयां कैयां समझावां रे, एको करल्यो।।

सिर पर चढ़र्‌या पाकिस्तानी, चीन्यां आंख दिखावै।
गद्दारां की फौज देश में खून की नद्‌यां बहावै।
अब तो सारां नै चैतावां रे, एको करल्यो।।
कै थांनै कैयां कैयां समझावां रे, एको करल्यो।।

ऊंच–नीच जात्यां को झगड़ो, प्रान्त–प्रान्त को रगड़ो।
यां भैदां नै छोड़ां भायां, देश बणावां तगड़ो।
हिरदा–हिरदा नै मिलावां रे, एको करल्यो।।
कै थांनै कैयां कैयां समझावां रे, एको करल्यो।।

फूट पड़्यां नै कोई न पूछै, हो चाहे रणबंको।
एका की ताकत सूं बाजै, चौखूंटां में डंको।
भारत माता नै पूजावावां रे, एको करल्यो।।
कै थांनै कैयां कैयां समझावां रे, एको करल्यो।।

किसानों के देवता
भगवान श्री बलराम

मुद्रक :
गुप्ता ऑफसेट प्रिन्टर्स, लंका गेट, बून्दी Ph. 447845,2444450